International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 5 Issue 5, May- 2015
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 5.601 |

शिक्षा के गांधीवादी दर्शन पर एक अध्ययन

डॉ0 केशरी नन्दन मिश्रा
एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास)
पंडित दीन दयाल उपाध्याय राजकीय पी.जी. कालेज, सैदाबाद इलाहाबाद

सारांश
गांधीजी का सपना देश की राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति तक ही सीमित नहीं था, बल्कि वे आर्थिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक, नैतिक, ग्रामीण उत्थान आदि सभी क्षेत्रों में भारत की स्वदेशी परंपराओं को नवीनीकृत करके एक नए भारत का निर्माण करना चाहते थे। लेकिन इस सोच के साथ, स्वतंत्र भारत का शासक वर्ग छत्तीस का संबंध बनाता रहा। महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित शिक्षा प्रणाली को "बुनियादी शिक्षा" कहा जाता है। उन्होंने मुख्य रूप से मातृभाषा में शिक्षा का लक्ष्य रखा और बच्चों को कुशल और स्वतंत्र बनाने के लिए शिक्षा केंद्रित गतिविधि के लिए कहा। गांधीजी अपने आदर्श नागरिकों, सभी छोटी सहकारी समितियों और समुदाय में रहने वाले स्वाभिमानी और उदार व्यक्तियों के साथ छोटे, आत्मनिर्भर समुदायों का निर्माण करना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि कुछ स्थानीय शिल्पों को बच्चों के लिए शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ताकि वे अपने मन, शरीर और आत्मा को एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकसित कर सकें और अपने भविष्य के जीवन की जरूरतों को भी पूरा कर सकें। इस तरह के गांधीवादी शैक्षिक विचार विकास के लिए प्रासंगिक हैं और वर्तमान समस्याओं जैसे बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार और कई अन्य के समाधान प्रदान करते हैं। इस लेख में गांधी के शैक्षिक विचारों पर चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द: बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, आध्यात्मिक, नैतिक, ग्रामीण उत्थान

गांधीजी ने अपनी शिक्षा योजना में माध्यम के प्रश्न को महत्वपूर्ण मानते हुए इस बात पर जोर दिया कि भारत के विभिन्न प्रांतों में शिक्षा प्रदान करने का कार्य प्रान्तीय भाषाओं में अर्थात् उनकी मातृभाषा में किया जाना चाहिए। शिक्षा, जैसे परिवार, विवाह, धर्म, कानून और राजनीति समाज की महत्वपूर्ण संस्थाओं में से एक है जो सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने और विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा में गांधी का योगदान इस मायने में अनूठा है कि उन्होंने ब्रिटिश भारत में शिक्षा की एक स्वदेशी योजना विकसित करने का पहला प्रयास किया। भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के आगमन के साथ, शाही शिक्षा की एक विदेशी प्रणाली शुरू की गई, जो भारत की सदियों पुरानी, अद्वितीय और सर्व-समावेशी समग्र शिक्षा प्रणाली के विपरीत थी। इसने न केवल लंबे समय में भारतीय शिक्षा प्रणाली को अपूरणीय क्षति पहुंचाई है, बल्कि सभी प्रकार के अंतर, वर्ग-चेतना, पश्चिमी भौतिकवादी जीवन शैली के लिए बढ़ती लालसा आदि भी पैदा की है। गांधीजी के अधिकांश महत्वपूर्ण लेखन शिक्षा के लिए थे। भरत कुमारप्पा द्वारा दो पुस्तकों, बेसिक एजुकेशन (1951) और टुवर्ड्स न्यू एजुकेशन (1953) का संकलन और संपादन। ये लेखन ज्यादातर पत्र, भाषण, किताबों के उद्धरण और जल्द ही विविध हैं, लेकिन गांधीजी के अनुसार शिक्षा के एक सुसंगत दर्शन का निर्माण करने के लिए इन्हें एक साथ लिया जा सकता है।

जाहिर है, गांधीजी मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे ताकि शिक्षित व्यक्ति आम आदमी का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 5 Issue 5, May- 2015
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 5.601 |

प्रतिनिधि बन सके। हालांकि वे उच्च शिक्षा के स्तर पर वैकल्पिक विषयों के रूप में विदेशी भाषा सीखने और पढ़ने के खिलाफ नहीं थे, लेकिन वे शुरुआती दौर में मातृभाषा के माध्यम से बच्चों को पढ़ाने के पक्ष में थे। संयोग से, यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि गांधीजी निश्चित रूप से विभिन्न प्रांतों में संबंधित भाषाओं के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने के पक्ष में थे, लेकिन साथ ही वे सभी प्रांतों में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में चाहते थे। उन्होंने शिक्षा देना भी आवश्यक समझा और वे जीवन भर हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रचारित करने में लगे रहे। उनका शिक्षा दर्शन आदर्शवाद, प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता का सामंजस्यपूर्ण सम्मिश्रण है। आदर्शवाद गांधी के दर्शन का आधार है जबकि प्रकृतिवाद और व्यावहारिकता उस दर्शन को व्यवहार में लाने में सहायक हैं। इसलिए उन्हें व्यावहारिक-आदर्शवादी के रूप में जाना जाता है। उनका राष्ट्र "जीवन के लिए शिक्षा, जीवन के लिए शिक्षा और जीवन के लिए शिक्षा" था। महात्मा गांधी की इस परिभाषा में वह सब कुछ शामिल होगा जिसकी शिक्षा के तहत कल्पना की जा सकती है। प्रस्तुत लेख में गांधी जी के जीवन दर्शन से प्रभावित उनके शैक्षिक विचारों की चर्चा करने का प्रयास किया गया है।

महात्मा गांधी गहन ज्ञान और मनोरम नम्रता के व्यक्ति हैं, जो केवल एक लोहे की इच्छा और अनम्य संकल्प से लैस हैं और एक कमजोर व्यक्ति हैं, जो एक सामान्य इंसान की गरिमा के साथ सैन्य शक्ति का खामियाजा भुगतते हैं। वह भगवान में विश्वास करता था। उनके अनुसार, हालांकि व्यक्तियों के शरीर अलग-अलग होते हैं, फिर भी एक ही आत्मा हम सभी में व्याप्त है। संक्षेप में गांधीजी ने अनेकता में एकता का अनुभव किया और महसूस किया। उनके जीवन दर्शन में चार तत्व हैं - (1) सत्य, (2) अहिंसा, (3) भय और (4) सत्याग्रह (सक्सेना, 2003)। महात्मा गांधी शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा के पक्ष में थे। वे अंग्रेजी को शोषण का माध्यम मानते थे। वह अंग्रेजी भाषा के किस हद तक विरोधी थे, यह उनके निम्नलिखित घोषणा से स्पष्ट है - "यदि मैं एक तानाशाह होता, तो मैं आज एक विदेशी भाषा में पढ़ाना बंद कर देता। जिन्होंने बर्खास्त होने से इनकार कर दिया। मैं इंतजार नहीं करता पाठ्यपुस्तकें तैयार करें। उन्होंने बहुत अधिक किताबें न रखने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि भारत जैसे गरीब देश में पुस्तकों को ध्यान से रखा जाना चाहिए और उनकी संख्या कम होनी चाहिए। वह शिक्षक को पाठ्यपुस्तकों से अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। वे कहते थे कि 'शिक्षक छात्रों की पाठ्य पुस्तक है'।

गांधी का जीवन दर्शन आदर्शवाद के दर्शन पर आधारित है। उन्होंने आत्म-साक्षात्कार के अंतिम सत्य को प्राप्त करने के लिए सत्य, अहिंसा और नैतिक मूल्यों के आदर्शों की वकालत की। वह अपने स्वभाव से एक बच्चा है और एक व्यावहारिक व्यक्ति बन जाता है जब वह अनुभव करके और सीखकर सीखने की वकालत करता है। ये सभी एकीकरण की ओर ले जाते हैं, इसलिए प्रभावी शिक्षा और संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। (सक्सेना, 2003)। महात्मा गांधी का मानना था कि सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चे की आध्यात्मिक, मानसिक और शारीरिक शक्तियों का विकास करती है। वह चाहते थे कि शिक्षा के माध्यम से मानव शरीर, मन, हृदय और आत्मा की सभी शक्तियों का पूर्ण विकास हो। इन शक्तियों के विकास में एक समग्र और संतुलित दृष्टिकोण होना चाहिए। श्रम के प्रति संतुलित दृष्टिकोण वाले लोग ही नए भारत का निर्माण कर सकते हैं।

गांधी एक शैक्षिक दार्शनिक नहीं थे, लेकिन अपने स्वयं के अनुभवों के आधार पर, वे आत्म-बलिदान में विश्वास करने वाले दार्शनिकों में से एक हैं। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए उनके प्रेम को उनके दर्शन में बहुत स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। उनके पास एक स्पष्ट दृष्टि और देश में मौजूद समस्याओं के बारे में एक निश्चित दृष्टिकोण वाला

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 5 Issue 5, May- 2015
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 5.601 |

बहुमुखी व्यक्तित्व था। गांधी जी के अहिंसा के दर्शन की वर्तमान परिदृश्य में बहुत प्रासंगिकता है। उनके अनुसार अहिंसा का अर्थ दुष्ट की इच्छा के प्रति विनम्र समर्पण नहीं है। यह आत्मा शक्ति या सत्य शक्ति है। (विजयलक्ष्मी, 2016)। उनके सत्याग्रह का उद्देश्य अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करना है। सत्य और अहिंसा के पालन के आत्म-दर्द से हृदय परिवर्तन प्राप्त करने के लिए सत्याग्रह का नैतिक चेहरा होना चाहिए। जीवन के ऐसे दर्शन ने उन्हें शिक्षा के अपने स्वयं के दर्शन को विकसित करने में मदद की, जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए प्रेरणा का सही स्रोत हो सकता है।

गांधी के शैक्षिक विचार

गांधी की बुनियादी शिक्षा उनके शिक्षा दर्शन का व्यावहारिक अवतार थी। उनकी बुनियादी शिक्षा युवा शिक्षार्थियों को भविष्य के नैतिक रूप से स्वस्थ, व्यक्तिगत रूप से रचनात्मक, सामाजिक रूप से उत्पादक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करने का चुनौतीपूर्ण कार्य करती है, जो युवाओं को कौशल प्रदान करके उन्हें स्वरोजगार बनाकर बेरोजगारी की समस्या से निपटेंगे। गांधीजी का मानना था कि शिक्षा से बच्चे की सभी क्षमताओं का विकास होना चाहिए ताकि वह एक पूर्ण इंसान बन सके। इस तरह, एक पूर्ण और सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित व्यक्तित्व जीवन के अंतिम उद्देश्य को महसूस करने में सक्षम होता है जो कि सत्य या ईश्वर है। गांधीजी ने स्वयं समझाया है - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य बच्चे और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा में सर्वश्रेष्ठ का सर्वांगीण चित्रण है। साक्षरता न तो शुरुआत है और न ही शिक्षा का अंत है।

इस प्रकार, गांधीजी के शैक्षिक विचार में, बच्चे के व्यक्तित्व का विकास केवल साक्षरता या विभिन्न विषयों के ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण है। दूसरे शब्दों में, वह जीवन-केंद्रित और बाल-केंद्रित शिक्षा में विश्वास करते थे। स्कूल में 3 आर पढ़ना, लिखना और अंकगणित सीखने के अलावा, उन्होंने एच में हाथ, दिल और सिर के विकास पर जोर दिया। इस प्रकार, शिक्षा का उद्देश्य बच्चे के एकीकृत व्यक्तित्व का विकास करना होना चाहिए। गांधीजी के विचार में शिक्षक - महात्मा गांधी ने छात्रों के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक विकास में शिक्षा की भूमिका को बहुत महत्वपूर्ण माना। उन्होंने हमेशा शिक्षकों के आचरण को शिष्यों के लिए अनुकरणीय बनाने पर जोर दिया। वे शिक्षकों के कर्तव्य के संदर्भ में कहते हैं, "एक शिक्षक आध्यात्मिक शिक्षा किताबों से नहीं, बल्कि अपने आचरण से दे सकता है। यदि मैं अपने आप से झूठ बोलूं और अपने शिष्यों को सच्चा बनाने की कोशिश करूं, तो यह व्यर्थ होगा। एक कायर शिक्षक अपने शिष्यों को वीरता नहीं सिखा सकता।"

गांधी की शिक्षा की दृष्टि परोक्ष रूप से व्यक्तिगत और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के विचार से जुड़ी हुई है। 1937 में गांधी द्वारा बुनियादी राष्ट्रीय शिक्षा के रूप में प्रस्तावित नई तालीम या नई शिक्षा के केंद्र में स्वतंत्रता की अवधारणा थी, लेकिन इसका अर्थ आत्मनिर्भरता और समाज के हित में काम करना भी था। गांधी अपने विचार में स्पष्ट थे कि शिक्षा के मूलभूत सिद्धांतों में से एक यह है कि क्रिया और ज्ञान को कभी अलग नहीं किया जाना चाहिए। श्रम से सीखने के अलगाव के परिणामस्वरूप सामाजिक अन्याय होता है। गतिशील समाजों में, शिक्षा को व्यक्तियों को बदलती परिस्थितियों के अनुकूल होने और सामाजिक परिवर्तन के कार्य में रचनात्मक भागीदारी के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण से लैस करना होता है। यह युवाओं में निराशा, अवसाद, चिंता और आत्महत्या के विचार की भावना को दूर करने में मददगार साबित हो सकता है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 5 Issue 5, May- 2015
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 5.601 |

गांधीजी के अनुसार शिक्षा के माध्यम से एक बच्चे को किसी उद्योग या व्यवसाय को अपनाकर जीवन की भविष्य की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक उत्पादक शिल्प सीखने में सक्षम होना चाहिए। इसलिए, उन्होंने शिक्षा के मुख्य उद्देश्य के रूप में आत्मनिर्भरता और अपनी आजीविका कमाने की क्षमता के लिए शिक्षा की वकालत की। इस उद्देश्य के लिए उन्होंने बच्चे को मजदूर बनाने के लिए समझदारी की, लेकिन कामना की कि हर बच्चा सीखने में लगे और कुछ सीखने को मिले क्योंकि वह कमाई में व्यस्त है। उन्होंने वकालत की कि व्यावसायिक शिक्षा के साथ-साथ सांस्कृतिक उन्नति भी हासिल की जानी चाहिए। विकास के दो पहलू साथ-साथ चलने चाहिए। शिक्षा पर गांधी के सभी विचार मुख्यतः नैतिक सिद्धांतों पर आधारित थे। गांधी के जीवन के बारे में पढ़कर, हमें लगता है कि उन्होंने जो भी काम किया या जो भी विश्वास उन्होंने किया, उसमें वे व्यक्तिगत रूप से गहराई से शामिल थे। लेकिन इस प्रकार की व्यक्तिगत संबद्धता अक्सर 'उच्च सत्य' तक पहुंचने के अपने उद्देश्य पर विचार करती थी, और यह सत्य से लिया गया था गांधी की धार्मिक ग्रंथों की व्याख्या।

गांधीजी ने जोर देकर कहा कि शिक्षा को व्यक्तिवाद के सभी पहलुओं को सामंजस्यपूर्ण रूप से विकसित करना चाहिए। उनका यह भी मानना था कि शिक्षा का अनिवार्य उद्देश्य नैतिक विकास या चरित्र विकास है। गांधीजी की इच्छा थी कि प्रत्येक बच्चा अपने आप में देवत्व को महसूस करके एक दिव्य मनुष्य के रूप में विकसित हो। गांधी खुद लिखते हैं। "स्वयं को विकसित करना चरित्र निर्माण और पूर्णता और दिव्यता की प्राप्ति के लिए खुद को तैयार करना है। हम सभी जानते हैं कि गांधी जी ने देश के विकास से जुड़े कई मुद्दों पर अपने विचार दुनिया के सामने रखे थे. उनमें से एक महत्वपूर्ण बिंदु भारत की शिक्षा प्रणाली थी। आज के युग में शिक्षा के क्षेत्र में हम जिन समस्याओं या समस्याओं का सामना कर रहे हैं, शायद शिक्षा पर गांधी जी के विचारों से हमें कुछ समाधान मिल सकता है।

गांधीजी की 'बुनियादी शिक्षा' नौकरी केंद्रित, मूल्य आधारित और जनोन्मुखी थी। यहां यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि ये अभी भी हमारे देश में महत्वपूर्ण शिक्षा आवश्यकताएं हैं। उसकी शिक्षा की योजना में ज्ञान को गतिविधि और व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ा जाना चाहिए। इसलिए उनका पाठ्यक्रम गतिविधि केंद्रित है। इसका उद्देश्य बच्चे को व्यावहारिक कार्य के लिए तैयार करना, प्रयोग और शोध करना है ताकि वह खुद को शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से विकसित कर सके और समाज का उपयोगी सदस्य बन सके। इस गतिविधि-केंद्रित पाठ्यक्रम में, गांधी ने मातृभाषा, बुनियादी शिल्प, अंकगणित, समाजशास्त्र, सामान्य विज्ञान, कला, संगीत और अन्य विषयों को शामिल किया। उन्होंने आगे कहा कि कक्षा एक से पांच तक के लड़के और लड़कियों के लिए पाठ्यक्रम समान होना चाहिए। उसके बाद लड़कों को कोई कला सिखाई जाए और लड़कियों को गृह-विज्ञान की पढ़ाई करनी चाहिए। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि गांधीजी की बुनियादी शिक्षा की योजना केवल प्राथमिक और जूनियर चरणों तक ही सीमित है।

गांधी ने यह भी जोर दिया कि प्राथमिक शिक्षा के लिए उनकी योजना में "स्वच्छता, स्वच्छता, पोषण के प्राथमिक सिद्धांत" के अलावा संगीत अभ्यास के माध्यम से अनिवार्य शारीरिक प्रशिक्षण शामिल होगा। गांधीजी का तर्क है कि उनकी योजना छात्रों को उनके माता-पिता और उनके माता-पिता के लिए मजबूत, आत्मविश्वास और उपयोगी बनाती है। देश। गांधीजी कहते हैं कि उनकी व्यवस्था से साम्प्रदायिक सौहार्द बढ़ेगा क्योंकि यह सभी के लिए समान होगा; यह एक "व्यावहारिक धर्म, स्वयं सहायता का धर्म" होगा।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 5 Issue 5, May- 2015
ISSN(o): 2249-7382 | Impact Factor: 5.601 |

मानसिक विकास को प्राप्त करने के लिए यहां यह भी याद रखने योग्य है कि गांधीजी ने शिक्षा के बारे में अपने विचारों को लागू किया था। दक्षिण अफ्रीका का फीनिक्स आश्रम हो या अहमदाबाद का साबरमती आश्रम, इन सभी में उन्होंने अपने उपरोक्त विचारों के अनुसार बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की थी। गांधीजी ने शिक्षा के तरीकों को समझने में नाराजगी व्यक्त की और इसे दोषपूर्ण माना और शिल्प और व्यवसाय को शिक्षा का साधन बनाने पर जोर दिया। उनकी इच्छा थी कि कुछ स्थानीय शिल्पों को बच्चों के लिए शिक्षा का माध्यम बनाया जाए ताकि वे अपने शरीर, मन और आत्मा को सामंजस्यपूर्ण तरीके से विकसित कर सकें और अपने भविष्य के जीवन की जरूरतों को पूरा कर सकें। इस प्रकार गांधीजी की शिक्षा पद्धति वर्तमान से भिन्न थी। उन्होंने अपनी शिक्षण पद्धति में निम्नलिखित सिद्धांतों के महत्व पर जोर दिया: -

निष्कर्ष:

स्पष्ट है कि गांधी जी शिक्षा के उद्देश्य को केवल बुद्धि या मन के विकास तक ही सीमित नहीं मानते थे, बल्कि चाहते थे कि इसे एक पूर्ण आध्यात्मिक अभ्यास के रूप में किया जाए, जो मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक विकास के साथ-साथ, उसके आध्यात्मिक उत्थान में सहायक हो। उनकी दृष्टि में शरीर के साथ-साथ आत्मा का विकास भी शिक्षा का अविभाज्य अंग होना चाहिए। अत: उन्होंने वर्ण-ज्ञान से परे जाकर शिक्षा के लिए इसे आवश्यक समझा - "शिक्षा से मेरा तात्पर्य यह है कि बालक या वयस्क के शरीर, मन और आत्मा की सर्वोत्तम क्षमताओं को प्रकट कर बाहरी प्रकाश में लाया जाना चाहिए। आधुनिक शिक्षा की प्रणाली उपभोक्तावाद, भौतिकवाद, अनुचित प्रतिस्पर्धा और हिंसा के मूल्य को बढ़ाने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करती है। नैतिक मूल्यों के क्षरण, युवा अशांति, पारिस्थितिक हिंसा और समाज में बढ़ती भयावहता पर बढ़ती चिंता ने इसके पुनरुद्धार की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया है। स्वदेशी भारतीय विरासत और जीवन शैली। गांधी आधी सदी पहले इस तरह के संभावित विकास की कल्पना कर सकते थे और बुनियादी शिक्षा (शाह, 2017) के एक नए विकल्प की वकालत कर सकते थे। इससे, निश्चित रूप से, शिल्प के माध्यम से सीखने पर जोर बरकरार रखा जा सकता है, लेकिन शायद समय के साथ संशोधित। उनके शैक्षिक विचार सत्य, प्रेम, आत्म-बलिदान, अहिंसा के चरित्र निर्माण के शाश्वत सिद्धांतों पर आधारित हैं, इसलिए, उनकी प्रासंगिकता कभी नहीं खोएगी। ईड वर्तमान परिदृश्य के अनुसार अपने विचारों को अनुकूलित करना है। जब शिक्षा के माध्यम से युवा मन में पर्यावरण चेतना, नैतिक मूल्य, पारस्परिक कौशल, समुदाय और समाज उन्मुख जागरूकता विकसित की जाती है, तभी सही मायने में देश का विकास संभव हो सकता है।

References

- Allen, D. (2007). Mahatma Gandhi on violence and peace education. *Philosophy east and west*, 290-310.
- Joseph, P. (2012). Mahatma Gandhi‟ s concept of educational leadership. *International Journal of Economics Business and Management Studies*, *1*(2), 60-64.
- Misra, R. P. (1989). *Gandhian Model of Development and World Peace* (No. 1). Concept Publishing Company.

- Parekh, B., Parel, A., Haksar, V., Johnson, R. L., Gier, N. F., Dallmayr, F., ... & Naidu, M. V. (2008). *The philosophy of Mahatma Gandhi for the twenty-first century*. Lexington Books.
- Parel, A. J. (2006). *Gandhi's Philosophy and the Quest for Harmony*. Cambridge University Press.
- Saxena, S. (2003), "Principles of Education", Meerat, Surya Publication.
- Walz, T., & Ritchie, H. (2000). Gandhian principles in social work practice: Ethics revisited. *Social Work*, *45*(3), 213-222.
- Weber, T. (2001). Gandhian philosophy, conflict resolution theory and practical approaches to negotiation. *Journal of Peace Research*, *38*(4), 493-513.